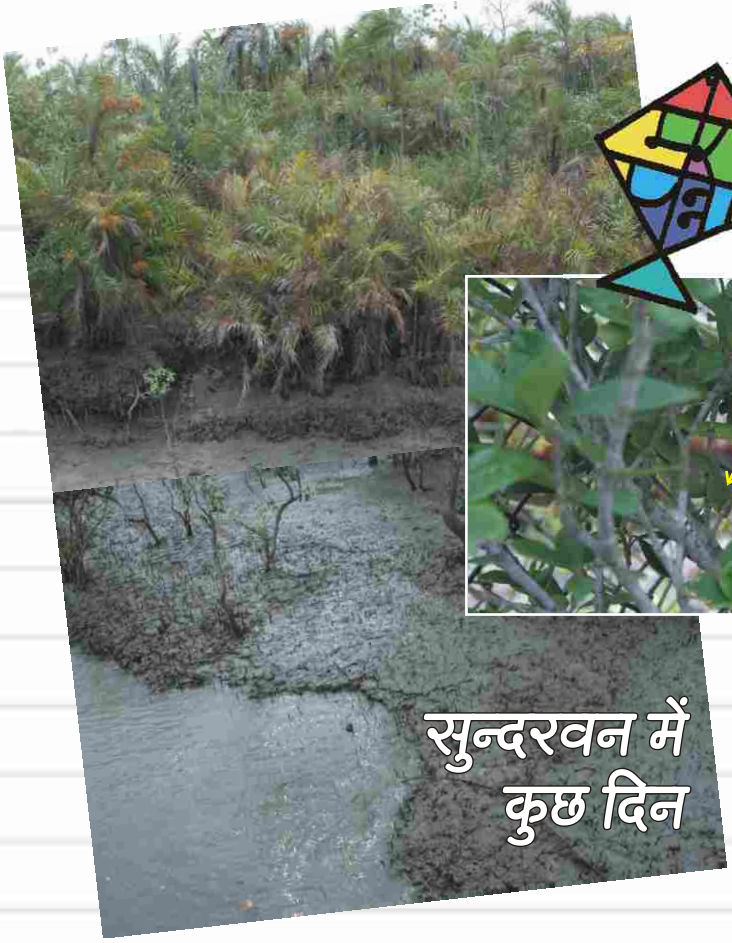

सुन्दरवन में कुछ दिन

25 मई 2008

आज ही सुन्दरवन पहुँचे। गोशाबा घाट में एक बड़ी-सी नाव में बैठ हम अपने रुकने की जगह पर पहुँचे। हम एक घास-फूस की झोपड़ी में ठहरे थे। दोपहर को हमने मछली का झोल और चावल खाया। (मुझे मछली बिलकुल नहीं पसन्द पर पापा कहते हैं कि हमें जो कुछ भी दिया जाए उसे खाना चाहिए।) और फिर एक और बड़ी नाव में बैठ हम नदी देखने गए। मैंने एक ओसप्रे देखा जो साँप की दावत उड़ा रहा था। लेकिन अफसोस कि वहाँ मगर न थे। हम पाँच बजे तक नाव में रहे। फिर अपने ठिकाने पर पहुँचे, खाना खाया और बिस्तरों के हवाले हो गए।

26 मई

अगली सुबह हम 6 बजे उठे। अपना नाश्ता बाँधा और नाव में जा बैठे। हमने देखा कि लोग टाइगर प्रॉन (झींगे) को पकड़ने में लगे थे। वहाँ एक भी मगरमच्छ न था – इसका कारण शायद बहुत अधिक गर्मी होना था। हमारे गाइड ने बताया कि सर्दियों में मगरमच्छ यहाँ नदी किनारे लेटे हुए धूप सेंकते रहते हैं। अचानक पानी से मछली के डैने का कुछ हिस्सा बाहर झाँका। और पिताजी चिल्लाए, "देखो गैंजैटिक डॉल्फिन।" मैं उत्सुकता से इतना भर गया कि गिरने ही वाला था। छह बजे हम वापस अपने ठिकाने पर आ गए। हमने टाइगर पाम भी देखे जिनके पीछे दिन में बाघ छुपा करते हैं। इन पेड़ों का रंग बाघ की खाल से इतना मेल खाता है कि बाघ को पहचान पाना मुश्किल हो जाता है। पर यहाँ बाघ कहाँ!

27 मई

आज हम नाव को सुन्दरवन के ठेठ भीतरी हिस्सों तक ले गए। वहाँ मैंने मशहूर मैंग्रोव – सुन्दरी के पेड़ – देखे। इन्हीं की वजह से सुन्दरवन को यह काम मिला। मैंग्रोव के पेड़ अपनी जड़ों से साँस लेते हैं। इसकी जड़ें ज़मीन के नीचे जाने के बाद फिर ऊपर आती हैं। इसकी जड़ें देखने में तो बिलकुल स्टील की कीलों जैसी लगती हैं – बस फर्क इतना ही है कि कॉक्रीट की बजाय वे मिट्टी से फूटती हैं! कुछ पेड़ बीच पानी में खड़े थे। नक्शे में तो मैंने डेल्टा कई बार देखा है पर असल ज़िन्दगी में डेल्टा देखने का मेरे लिए यह पहला मौका था।

बाद में, जंगल के बेस कैम्प में मैंने एक हरा साँप देखा...फुफकारता हुआ! हमने कुछ हिरणों को तैरते हुए नदी पार करते देखा। और आखिर मुझे दिख ही गया वह जिसका मुझे कब से इन्तज़ार था – मगरमच्छ! लगभग 10 फीट लम्बा मगरमच्छ पानी में आधा डूबा हुआ था। उसकी बड़ी-बड़ी पीली आँखों में दरारें दिख रही थीं। इस जगह का नाम है सुधान्याखली। तटबन्ध के पीछे कुछ लड़के फुटबॉल खेल रहे थे। पापा ने बताया कि बाँध टूटने पर वे वॉटर-पोलो खेलते हैं। जैसे ही हमारी नाव आगे बढ़ी मैंने मुड़कर देखा – हमारी जैसी नावों द्वारा छोड़ा गया तेल और ग्रीस पानी में तैर रहा था। हरा-भूरा-सा पानी धीमे-धीमे बह रहा था। भाटा के समय जब समुद्र में पानी कुछ उतर गया, नीचे बिछी तलछट में मेरे पाँव धँसते ही जा रहे थे।

– रित्विक साहा, छठी, नई दिल्ली

मेरा पन्ना

अंबुज जहाज़ की दास्तान

मेरा नाम अंबुज है। वैसे मेरी क्लास में बच्चे मुझे अंबुज जहाज़ कहते हैं। वो क्या है कि मेरा सरनेम झा है इसलिए। एक महीने में एक करोड़ बार मेरी पिटाई होती है। थोड़ी ज़्यादा ही बार होती होगी। मेरी बहिन का नाम है कृति। पिटाई के कारण हैं – कृति से झगड़ा, कृति को चिढ़ाना, कम पढ़ाई करना, ज़्यादा देर टी वी देखना, और आजकल चोरी से आमरस पीना। पिटाई के साधन – रबर की चप्पल की पट्टियाँ (स्ट्रेप)। अरे वही जिनमें अपना पैर फँसता है, और डंडे तो हैं ही। कहाँ-कहाँ होती है पिटाई – गाल, जाँघ का पिछला हिस्सा, पीठ और पोंद। पीठ पर पिटाई ज़रा कम लगती है। कई बार हल्की हो तो थोड़ा आराम ही महसूस होता है। पोंद की पिटाई में कभी-कभी चोट लग जाती है। तो मैं चुपचाप अकेले में जाकर क्रीम लगा लेता हूँ। पापा कभी मैथली में और कभी हिन्दी में गाली देते हैं या डाँटते हैं तो बुरा लगता है। अरे सुनिए तो, मेरे नाम से मत छाप देना, नहीं तो बदनामी तो होगी ही ....और मार पड़ जाएगी सो अलग! अच्छा, ऐसा करना मेरे नाम के बिना ही छाप देना। नाम से छापा तो आगे से कुछ नहीं लिखूँगा। अच्छा, एक काम करो कि मेरा नाम अंबुज कर देना और बहिन का कृति। ठीक है।

–इस दस वर्षीय लेखक ने नाम-पता बताने से मना किया है।

पूछती है पूँछ...

कुत्ते की पूँछ,
पूछती है कुत्ते से
गाय की पूँछ,
पूछती है गाय से
बन्दर की पूँछ,
पूछती है बन्दर से
घोड़े की पूँछ,
पूछती है घोड़े से
शेर की पूँछ,
पूछती है शेर से
तेरा पेट तो खराब नहीं है ना
दिन भर बदबू सुँघवाओगे
सारा दिन बरबाद करवाओगे

– सोमेश केलकर, 10 वर्ष, होशंगाबाद, म.प्र.

–सिद्धार्थ राजप्रिय, 13 साल, रायबरेली, उत्तरप्रदेश

—आयुष दलाल, 6 वर्ष, पादरा, गुजरात

—अक्षर, 5 साल, होशंगाबाद, म.प्र.

ऊपर देखती चिड़िया

अपने चित्र के बारे में अक्षर ने माँ को बताया...

यह घर अक्षर ने बनाया है। घर में मम्मी, पापा और अक्षर हैं। अक्षर नल से पानी भर रहा है। मम्मी घर का काम कर रही है और पापा कम्प्यूटर पर बैठे हैं। गाय ऊपर चिड़िया को देख रही है। अक्षर ने पानी भर लिया और मम्मी को बुलाया। मम्मी मटके में पानी लेके जा रही है। गाय पहले घास चर रही थी, फिर चिड़िया ने चूँ-चूँ किया तो उसे देखने लगी। गाय ऊपर देखकर सोच रही है कि मैं भी उड़ती चिड़िया जैसे!

—जुई हरवड़े, छठी, पुणे, महाराष्ट्र

कविता

भालू आया भालू आया,
संग में अपने एक आलू लाया।
आलू को भूँजकर जब वह खाएगा,
तब उसका मन आलू से हट जाएगा।
जंगल में जब वह जाएगा,
चिड़ियों को अपने दाँत दिखाएगा।
संग में गाना भी गाएगा,
मस्ती से दना-दन नाचेगा।
बच्चों को खूब डराएगा।
हलुवा-पूड़ी छीनकर खाएगा,
फिर अपने घर में जाएगा,
चादर ओढ़के सो जाएगा।
भालू आया, भालू आया।

—आशीष कुमार, छठी, कानपुर, उ.प्र.